

रात्रिक्लास 20/4/68:- बहुत ही भक्त बैठे हुये हैं। जानते हैं हम कितना माथा मारते थे। मन्दिरों में, तीर्थों पर जाते थे। तुम भी करते थे, दुनियां वाले भी करते थे। अभी बाप ने सभी बातों से छुड़ाये दिया है। हे शिवबाबा कहना भी छुड़ा दिया। बात न करो। यह ज्ञान है। सिर्फ बाप और वर्से को याद करो। यह तो जानते हो स्वर्ग में देवताएं सर्व गुण सम्पन्न थे। हमको भी इन जैसा सम्पूर्ण बनना है। बाप से यह वर्सा मिलता है; इसलिए दैवी गुण भी धारण करना है। सिर्फ बाप को याद करना है। यह अन्दर की बात है। भक्ति मार्ग में सब कुछ करते हैं क्रियाएं आदि। तुमको सब बंद करना है। छी-2 बात न करो। बाप को सिर्फ बुद्धि से जाना जाता है। यह बाप है। आगे देहधारी को बाप समझते थे तो बात करनी पड़ती थी। अभी विदेही को बाप समझते हैं तो बात नहीं करनी पड़ती। इशारे से ही बाप को याद करते हैं। दुर्गति में कितने धक्के हैं। सदगति के लिए सिर्फ चुप रहना है। (मन)मनाभव। घर जाकर फिर आवेंगे। बाकी अलफ़ जाकर रहता है। कहते हैं ना उठकर अल्ला एक बाप को याद करो। यह सोने का समय नहीं है। शिवबाबा चुप है ना। उनकी महिमा करते हैं। शान्ति का सागर है। उनके अन्दर ज्ञान भी, सुख भी है; परन्तु प्रत्यक्ष कैसे हो? तो बच्चों के आगे प्रत्यक्ष होते हैं। तुमको भी ज्ञान अन्दर रहता है। बाहर जाने की दरकार नहीं। अन्दर चुपके से याद करो तो बाप से बल मिलता है। वह सर्वशक्तिवान है। बाप से बल मिलता है गुल-2 होने से। उनसे बल मिलता है छी-2 होने से। बाप कहते हैं यह सभी छोड़ो। अभी वापस जाना है। (मे)रे को याद करेंगे तो खाद निकल जावेगी। इसमें भक्ति की बात नहीं। मनुष्य बन्दर से मन्दिर लायक बनते हैं। तो कुछ भी करने की दरकार नहीं। तुम शिवबाबा के लायक बनते हो। सूरत मनुष्य की है, सीरत देवताओं की है। बन्दरनपना न होना चाहिए। वह निकल जाना है। किसको गुरर-2 करना जैसे बन्दर बन जाते हैं। यह भी छोड़ देना है। बच्चों को गुरर-2 करना सिखलाता हूँ क्या? यह पुरानी आदतें बन्दरपने की चलन को छोड़ देनी है। कोई गुरर-2 करे तो रेसपॉण्ड न करना है। अपने हाथ मे लॉ नहीं उठाओ। बाबा को बोलो। बाबा युक्ति बतावेंगे। बाबा क्या बतावेंगे? (हियर नो इविल) सामना न करो। आँसू भी नहीं बहाना है। यह भी राँग हो गया। अच्छा, बच्चों को गुडनाइट। नमस्ते। ओमशान्ति।